Vol. 8, Issue: 6, June: 2020
(IJRSML) ISSN: 2321 - 2853

सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय स्तर

ललिता देवी
शोधार्थी–हिंदी एवं भाषा विज्ञान विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

सारांश

हिंदी साहित्य में 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' जैसी यशस्वी पंक्ति की रचनाकार सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य जगत में महत्त्वपूर्ण स्थान है। वह देश के लिए एक निधि हैं। उन्होंने न केवल साहित्य रचना की अपितु स्वतंत्रता आंदोलन में भी अपनी अग्रणी भूमिका निभाई। सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 ई0 में परतंत्र भारत भूमि पर हुआ। उन्होंने गुलामी का दर्द देखा और सुना ही नहीं बल्कि जीया भी था। उन्होंने देखा कि गुलामी कितनी भयावह है, देश में कितना अत्याचार बढ़ता जा रहा था, अंगरेज अपनी स्वार्थपरता की हद पार करते जा रहे थे। वे देश विनाश कर रहे थे और 'फूट डालो और राज करो' का परचम लहरा रहे थे। अंगरेजों ने अपनी धारणा बना रखी थी कि देश में साम्प्रदायिकता की ज्वाला फूँककर आपस में ही संघर्ष को बढ़ावा देना था। अतः देशभक्त एवं 'लेखनी की धनी' कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने देशवासियों की सोयी हुई आत्मा को जगाया और उन्हें कर्तव्य मार्ग पर अग्रसित किया।

मुख्य शब्द : *राष्ट्रीयता, साम्प्रदायिकता, स्वतंत्रता*

आधुनिक युग में सुभद्रा कुमारी चौहान जी एक मात्र महिला कवयित्री हैं जिनके काव्य में राष्ट्रीयता का स्वर विद्यमान है। उन्होंने भारत माता की पुकार सुन रक्षा करने के लिए स्वयं प्रस्तुत हो जाती हैं–

''सबल पुरूष यदि भीरू बने,
तो हमको दे वरदान सखी
अबलाएँ उठ पड़ें देश में,
करें युद्ध घमसान सखी!
पन्द्रह कोटि असहयोगियाँ,
दहला दें ब्रह्मण्ड सखी!
भारत–लक्ष्मी लौटाने को,
रच दें लंका काण्ड सखी।।''[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान ने 1857 की क्रांति की याद को पुनः अपनी कविता 'झाँसी की रानी' में तरोताजा कर देती हैं।

''सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,

गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थीं,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हर बोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थीं।।''[2]

इस कविता के माध्यम से सुभद्रा जी ने भारतवासियों को महारानी लक्ष्मीबाई के वीरता एवं शौर्य की याद दिलायीं। वे याद दिलाती हैं कि किस तरह अकेली ही रानी लक्ष्मीबाई ने फिरंगियों के छक्के छुड़ा दिये।

''लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार'' आज फिर से उसी ओज एवं वीरता के साथ सभी देशवासियों को एकजुट होकर पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए।

''विजयिनी माँ के वीर सुपुत्र
पाप से असहयोग ले ठान।
गुँजा डालें स्वराज्य की तान,
और सब हो जावें बलिदान।''[3]

सुभद्रा जी देशवासियों को कर्त्तव्यबोध करती हैं–

''जरा ये लेखनियाँ उठ पड़े,
मातृ–भू को गौरव से मढ़ें!
करोड़ों क्रान्तिकारिणी मूर्ति,
पलों में निर्भयता से गढ़ें।।
हमारी प्रतिभा साध्वी रहे
देश के चरणों पर ही चढ़े।
अहिंसा के भावों में मस्त
आज यह विश्व जीतना पड़ें।''[4]

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता मात्र राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति ही नहीं अपितु वह हमारी समग्र राष्ट्रीय चेतना का प्रतिरूप है। तत्कालीन समय के पैरों के निशान उनके साहित्य में परिलक्षित होता है। तद्युगीन समाज में व्याप्त अराजकता का वर्णन विपिनचन्द्र ने अपनी पुस्तक 'आधुनिक भारत का इतिहास' में लिखा है कि ''भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक समूह ने धीरे–धीरे यह देखा कि उसके हित अंग्रेज शासकों के हाथों में असुरक्षित हैं। किसान देख रहे थे कि सरकार जमीन की मालगुजारी के नाम पर उनकी उपज का एक बड़ा हिस्सा उनसे ले रही थी। सरकार और उसकी पुलिस, उसकी अदालतें और अधिकारी, सभी उन जमींदारों और भू–स्वामियों के समर्थक और रक्षक जो किसान से जमकर लगान वसूलते थे, वे उन व्यापारियों तथा सूदखोरों के रक्षक थे जो तरह–तरह से किसान को धोखा देते, उसका शोषण करते तथा उसकी जमीन उससे

Vol. 8, Issue: 6, June: 2020
(IJRSML) ISSN: 2321 - 2853

छीन लेते थे। जब कभी किसान जमींदारों और सूदखोरों के दमन के खिलाफ उठ खड़े होते, पुलिस तथा सेना कानून और व्यवस्था के नाम पर उनको कुचल दिया करती थी।''[5]

स्वतंत्रता संग्राम की बलिवेदी पर शहीद हो जाने वाली रानी लक्ष्मीबाई को अपनी कविता द्वारा श्रद्धांजली अर्पित की है–

''आओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी''[6]

सुभद्रा जी ने ओजस्वी स्वर में राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत कविताएँ लिखी हैं। 'राखी की चुनौती' कविता में लिखती हैं–

''मेरा बंधु माँ की पुकारों को सुनकर के तैयार हो जेल खाने गया है।
छीनी हुई माँ की स्वाधीनता को वह जालिम के घर से लाने गया है।।''[7]

इनकी कविताओं में हुंकार है जो भारतवासियों को निर्भीकतापूर्वक स्वतंत्रता की बलिवेदी पर चढ़ जाने के लिए प्रेरित करती है–

''हमें नहीं भय संगीनों का, चमक रहीं जो उनके हाथ।
जरा नहीं डर उन तोपों का, गरज रहीं जो बल के साथ।।
ढीठ सिपाही की हथकड़ियाँ
दमन नीति के वे कानून।
डरा नहीं सकते हैं हमको
यद्यपि बहावें प्रतिदिन खून।।''[8]

देश को आजादी दिलाने एवं उसका नए सिरे से पुनर्निर्माण कराने की उत्कट अभिलाषा और देशवासियों के हृदय में अपने देश एवं जनता के प्रति प्रेम और उत्साह के भाव से भर देने वाले भाव उनकी कविता में मिलते हैं–

''दो, विजये ! वह आत्मिक बल दो, वह हुंकार मचाने दो।
अपनी निर्बल आवाजों से, दुनिया को दहलाने दो।।
'जय स्वतन्त्रिणी भारत–माँ' यों कहकर मुकुट लगाने दो।
हमें नहीं, इस भू–मंडल को, माँ पर बलि–बलि जाने दो।''[9]

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं का मूल स्वर राष्ट्रीय है और उनमें राष्ट्रीयता के सम्पोषक तथा स्वातंत्र्य चेतना जगाने में समस्त उपादानों का प्रयोग किया।

''भारत में कई प्रदेश हैं, कई भाषाएँ, कई आचार–विचार हैं, कई श्रद्धा–विश्वास हैं, कई जातियाँ हैं, सम्प्रदाय हैं, रीति–रिवाज हैं। यहाँ पर व्यक्ति अपने विश्वास के अनुसार चलने को स्वतंत्र है। अपने विश्वास पर चलकर दूसरों के विश्वास का आदर करते हुए इन तमाम विविधताओं के पीछे के सर्वमान्य तत्व को स्वीकार करना, पूरे देश को एक इकाई के रूप में मानकर इसके प्रति प्रेम, निष्ठा एवं समर्पण भाव रखना ही राष्ट्रीयता है। राष्ट्रीयता का मूल मंत्र ही एकात्मकता है।''[10]

भारत माता को स्वतंत्र कराने के लिए नवयुवकों एवं नवयुवतियों में अपनी कविताओं द्वारा नव ओज, नव स्फूर्ति एवं ऊर्जा का संचार करती हैं। राष्ट्र की आन–बान–शान और हमारी स्वतंत्रता का प्रतीक राष्ट्रध्वज तिरंग को लेकर सुभद्रा जी वाणी ओजस्वी स्वर में ध्वनित हो उठती है–

''रणभेरी का नाद सदा हो, क्या अब रूक जायेगा?
जिसको ऊँचा किया वही क्या, झंडा झुक जायेगा,
हैं संतप्त तदपि आशा से, स्वागत आज तुम्हारा
एक बार फिर कह दो झंडा ऊँचा रहे हमारा।।''[11]

स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'जलियावाँला बाग में बंसत' में मार्मिक वेदना का सचित्र वर्णन प्रस्तुत करती हैं–

''कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा–खा कर।
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।।
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए है।
अपने प्रिय–परिवार देश से भिन्न हुए हैं।।[12]
इस हत्याकाण्ड से पूरा देश दहल उठा था।

''वास्तव में सुभद्रा जी सन् सत्तावन की झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का अवतार थीं, जिसने अपने अदम्य उत्साह और क्रांतिकारी साहित्य–सृजन के द्वारा भारतीय जनमानस को उद्‌बुद्ध एवं प्रेरित किया। वे अपनी क्रांतिकारी साहित्य–सृजन के लिए युगों–युगों तक याद की जाएगी। उनका सम्पूर्ण काव्य–सृजन कालजयी है जो उनके समय में भी प्रासंगिक था, आज भी प्रासंगिक है और भविष्य में भी प्रासंगिक रहेगा।''[13]

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय भावधारा की शीर्षस्थ हैं। उनके काव्य में मध्यकालीन भक्ति भावना एवं आधुनिक राष्ट्रीयता का अद्‌भुत संगम परिलक्षित होता है। 'लोहे को पानी कर देना' कविता में उन्होंने अपने को देश प्रेम, देश वत्सलता एवं देशभक्ति के साथ जोड़ा है। वे प्रभु से प्रार्थना करती है:

''जब–जब भारत पर भीर पड़ी, असुरों का अत्याचार बढ़ा,
मानवता का अपमान हुआ, दानवता का परिवार बढ़ा।
तब–तब से करुणा से प्लवित करूणाकर ने अवतार लिया,
बनकर असहायों के सहाय दानव–दल का संहार किया।।''[14]

देशभक्ति, जन अस्मिता एवं राष्ट्रीयता का ओजस्वी वेग एवं विस्तार सुभद्रा जी की कविताओं मिलता है।

सुभद्रा जी स्वयं को देश के लिए समर्पित कर चुकीं थी, साथ ही साथ अपने अद्‌भुत रचना कौशल से जन–जन उत्साहित करती रहीं। वे कहीं देश की रक्षा के लिए रणबांकुरों का आहवान करते हुए समर्पण और बलिदान के गीत गातीं तो कहीं देश पर अत्याचार होते देख क्रांति और विद्रोह का

शंखनाद करती हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के सिद्धान्तों एवं उनकी राष्ट्रीय नीतियों का सुभद्रा ही पर बहुत प्रभाव पड़ा। उनकी अहिंसावादी प्रवृत्ति से प्रभावित होकर उन्होंने 'लेखनी' को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। अपने लेखन में उन्होंने परतंत्र देश की यातना और व्यथा की निर्झरणी बहायी है तो कहीं स्वातंत्र्योत्तर भारत को दिव्य शक्ति मानकर आराधना की है।

परतंत्रता के दिनों में एक महिला होकर जैसी निर्भीकता और स्पष्टता सुभद्रा जी ने दिखाई वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी यह ओजस्विता, भाषा की सशक्तता एवं मुखरता वंदनीय है। इसीकारण से इन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की 'प्रथम राष्ट्र–कोकिला' की उपाधि से विभूषित किया गया है। उनके साहित्य में वह शक्ति है जो तीर, तलवार, बंदूक एवं बम में भी नहीं है। वह मुर्दों में भी जीवन का संचार कर सकती है।

सुभद्रा कुमारी चौहान एक वीर स्वतंत्रता सेनानी एवं महान कवयित्री थीं, जिन्होंने अपनी ओजस्वी कविता के द्वारा देशभक्तों, रण–बांकुरों और सर्मपणशील युवाओं को जगाने का स्तुत्य कार्य किया। ''वे जीवन–भर आदर्शवाद के हथियार में वंचितों, उत्पीड़ितों के लिए लड़ती रहीं और उनके मुकाबले में जो ताकतें खड़ी थीं वे स्वयं को धर्म और कानून, पूँजी और समाज का ठेकेदार समझती थीं। उनके लिए, अपने स्वार्थों को आगे सामाजिक विषमता का कोई अर्थ नहीं था। इसी हकीकी जमीन पर सुभद्रा जी का वैचारिक और सृजनात्मक विकास हुआ, उनकी सोच ने स्वस्थ और स्वतंत्र राह खोजी थी। हर चुनौती के सम्मुख वे डटकर खड़ी रहीं और अपने अंतःकरण की सच्चाई को उन्हें निरुत्तर भी किया।''[15]

जिन दिनों सुभद्रा जी राजनीतिक रूप से सक्रिय थीं, उन दिनों राजनीति में सक्रिय महिलाओं की गिनी जा सकती थी। वे सिर्फ राजनेता नहीं थीं, बल्कि उससे कहीं ज्यादा एक संवेदनशील साहित्यकार थीं। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान मध्यप्रांत के राजनीतिक परिदृश्य में उनकी भूमिका को सदैव कृतज्ञता से याद किया जाएगा।

देश की प्रथम सत्याग्रही सुभद्रा के संघर्ष, उनके अडिग आत्मबल और आर्थिक झंझावातों को भी आनंद की एक लहर जैसा महसूस करने के भाव ने उन्हें एक घरेलू गृहस्थिन स्त्री और एक आम कवयित्री से बहुत ऊपर उठा दिया। घर–परिवार के विषम हालात के रहते हुए भी राष्ट्रधर्म के लिए किस सीमा तक संघर्ष किया जाना चाहिए, इसका उदाहरण स्वयं सुभद्रा जी थीं।

सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय भावधारा की कवयित्री हैं। देश की गुलामी ने उन्हें हिलाकर रख दिया था। देशभक्ति के मार्ग पर अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर सेनानियों की स्मृतियाँ बार–बार उन्हें झकझोरती रहती थीं। वे 'जलियाँवाला बाग में वसंत' शीर्षक कविता में लिखा उठती हैं–

''आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना।
यह है शोक–स्थान यहाँ मत शोर मचाना।।''[16]

सुभद्रा जी की राष्ट्रीय कविताओं की सरसता एवं सरलता उनकी पारिवारिक जीवन से संबंध रखने वाली रचनाओं में भी मिलती है। उनके काव्य को हम उनकी पारिवारिकता से अलग नहीं कर सकते। इस पारिवारिकता ही ने उनके काव्य में एक विशेष प्रकार की मधुरता और पूर्णता का गुण उत्पन्न किया है।

''राष्ट्रीय एक भावना है, जज़्बा है, जहाँ समग्र राष्ट्र के गुणगान का भाव है। राष्ट्रीयता एक प्रतिकंपनकारी ऊर्जा है, अनुगूँज है, समर्पण है। समग्र भूगोल, इतिहास और संस्कृति जहाँ रूपायित होती है। राष्ट्रीयता में देश का वंदन और अभिनंदन है। जहाँ की पावन–माटी का कण–कण पूजा धाम है। यहाँ की रज स्वर्ग से बढ़कर है।''[17]

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने साहित्य में आजादी की जंग को भरपूर मात्रा में जिया था और भारतीय जनमानस को उसके लिए तैयार करने में वही भूमिका अदा की थी जिसे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी अपने आन्दोलन के द्वारा पूरा किया था। सुभद्रा की राष्ट्रीय भावना का स्रोत कांग्रेसी आंदोलन नहीं, अपितु जनता के बीच जगी राष्ट्रीय चेतना थी, जिससे स्वयं सुभद्रा जी भी एकाकार थी और उसी राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति उनके काव्य साहित्य में अद्भुत संवेदनात्मक शक्ति के साथ हुई है।

सहायक ग्रंथ सूची

1.सुभद्रा समग्र, पृ.सं.– 81–82
2.सुभद्रा समग्र, पृ.सं.– 56
3.सुभद्रा समग्र, पृ.सं.– 92
4.सुभद्रा समग्र, पृ.सं.– 93
5.आधुनिक भारत का इतिहास– विपिनचन्द्र, पृ.सं.– 193
6.सुभद्रा समग्र, पृ.सं.– 65
7.सुभद्रा समग्र, पृ.सं.– 66
8.सुभद्रा समग्र, पृ.सं.– 100
9.सुभद्रा समग्र, पृ.सं.– 82
10.भारतीय साहित्य का राष्ट्रीय स्वर– सं. एवं सं0 जगदीश तोमर, पृ.सं.–79
11.सुभद्रा समग्र, पृ.सं.– 133
12.सुभद्रा समग्र, पृ.सं.– 71
13.लेख– 'राष्ट्रीय जागरण और सुभद्रा कुमारी चौहान'– रामपत यादव, पृ.सं.–61
14.सुभद्रा समग्र, पृ.सं.– 171
15.सुभद्रा कुमारी चौहान की सम्पूर्ण कहानियाँ– डॉ. मधु शर्मा (परिचय से)
16.सुभद्रा समग्र, पृ.सं.– 70
17.भारतीय साहित्य का राष्ट्रीय स्वर– सं. एवं सं0 जगदीश तोमर, पृ.सं.–61